अध्याय - 4

शास्त्रीय संगीत गायक कलाकारों द्वारा गायी हुई रचनाएँ एवं उनका विश्लेषण

स्वातंत्र्योंत्तर काल में, भक्ति संगीत के प्रति अपार स्नेह रखने वाले, शास्त्रीय संगीत के कुछ मूर्धन्य कलाकारों का परिचय तथा भक्ति संगीत के प्रति उनके विचार, अनुभूतियाँ तथा उनके योगदान के बारे में, गत अध्याय में चर्चा की है | इन सभी कलाकारों ने असंख्य भक्ति रचनाओं को संगीतबद्ध किया है तथा कई अधिक रचनाओं का गायन भी किया है | इस आध्याय में प्रत्येक कलाकार की एक-एक भक्ति रचना को लेकर उसका विश्लेषण किया है तथा कसेट्, सीडी एवं यु ट्यूब के माध्यम से उनकी अन्य भक्ति रचनाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास शोधार्थी ने किया है | सभी मूर्धन्य कलाकार शास्त्रीय संगीत गानेवाले होते हुए भी, भक्ति संगीत जैसी शब्द प्रधान गायकी को उन्होंने आत्मसात किया था तथा शास्त्रीय संगीत की महफ़िलों में 'भक्ति रचनाओं' का प्रस्तुतिकरण करके आम जनता को आत्मानंद की अनुभूति करवाई थी | अतः इन सभी श्रेष्ठ कलाकारों की भक्ति रचना का विश्लेषण; प्रत्येक रचना के शब्द तथा उसका भाव एवं गूढ़ार्थ को केंद्र में रखकर करनेका यथासांग यत्न शोधार्थी द्वारा किया गया है |

इस प्रबंध में, शोधार्थी द्वारा चयनित प्रत्येक कलाकार की, विश्लेषण हेतु ली गई भक्ति रचना का 'मूलभूत' नोटेशन लिखा गया है | अपितु, शास्त्रीय संगीत गानेवाले ये सभी श्रेष्ठ कलाकार, प्रत्येक महफ़िल के सांगीतिक माहौल या परिस्थिति के अनुसार; उसके भावार्थ को श्रोताओं के हृदय तक पहुँचाने के लिए भिन्न भिन्न स्वरसंगतीयों का प्रयोग करके गाते थे |

4.1 पंडित भीमसेन जोशी

4.1.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

जो भजे हरि को सदा, सोहि परम पद पावेगा

जो भजे हरि को सदा, सोहि परम पद पावेगा |

देह के माला, तिलक और छाप, नहीं किस कामके,

प्रेम भक्ति के बिना नहीं नाथ के मन भायेगा |

सोहि परम पद पावेगा, सोही परम पद पावेगा

दिल के दर्पण को सफा कर, दूर कर अभिमान को,

खाक हो गुरु के कदम की, तो प्रभु मिल जायेगा |

सोहि परम पद पावेगा, सोहि परम पद पावेगा

छोड़ दुनिया के मजे सब, बैठकर एकांत में

ध्यान धर हरी का चरण का, फिर जनम नहीं आयेगा |

सोहि परम पद पावेगा, सोहि परम पद पावेगा

दृढ़ भरोसा मन में करके, जो जपे हरिनाम को

कहता है ब्रह्मानन्द, ब्रह्मानन्द बिच समायेगा |

सोहि परम पद पावेगा, सोहि परम पद पावेगा

भक्ति रचना :- जो भजे हरि को सदा	राग :- भैरवी
मूल गायक :- पं भीमसेन जोशी	ताल :- तीनताल
गीतकार :- ब्रह्मानन्द	संगीतकार :- सवाई गंधर्व

4.1.2 भक्ति रचना का नोटैशन

9	10	11	12	13	14	15	16	1	2	3	4	5	6	7	8
														प	प
														जो	S
प	प	-	ध	प	ग	-	म	प	-	-	-	-	-	ग	म
भ	जे	S	ह	रि	को	S	स	दा	S	S	S	S	S	सो	ही
0				3				x				2			
ध	प	म	रे	सा	ध	-	नी	सारे	ग	-	-	-	-	ग	म
प	र	म	प	द	पा	S	वे	गाS	S	S	S	S	S	सो	ही
0				3				x				2			

ध	प	म	रे	सा	ध	-	नी	सारे	ग	-	-	-	-
प	र	म	प	द	पा	S	वे	गाS	S	S	S	S	S
0				3				x				2	

सां	नी	सां	सांसां	प	पप	प	प	धध	पध	नीध	प	-ग	रे	-	रेसा
देह	के	S	माला	ति	लक	औ	र	छाप	नही	किस	का	Sम	S	S	Sके
0				3				x				2			

सारे	गग	म-	मध	धध	सांनी	सां-	सांसां	धध	धध	पप	मम	--	--	ग	म
प्रेम	भक्ति	केS	बिना	नहीं	नाथ	केS	मन	भाS	येगा	SS	SS	SS	SS	सो	ही
0				3				x				2			

सांसां सां- नीसां -सां	सां- नीसां सां- सां	धध पप पप पध	नीप मग रेग रेसा
दिल केS दर्प Sण	कोS सफा कS र	दूS Sर कर अभि	माS नS कोS SS
0	3	x	2

गम ग- गम म	गम म- म- पध	नीसां नीध पध नी-	धप मग ग म
खाक होS गुरु के	चर णS कीS तोS	प्रभु मिल जाये गाS	SS SS सो ही
0	3	x	2

सांसां सां- नीसां -सां	सां- नीसां सां सां	धध प प पध	नीप मग रेग रेसा
छोS ड़S दुनि याS	के मजे स ब	बैS ठ क Sर	एS कांS तS Sमें
0	3	x	2

गम ग- गम म	गम म- म- पध	नीसांसां नीध पध नी-	धप मग ग म
ध्यान धर हरी का	चर णS का फिर	जनम नहीं आये गाS	SS SS सो ही
0	3	x	2

नीनी नीसां सां- नीसां	सां- रें नी ध-	धध पप प- पध	नीप मग रेग सा
दृढ़ भरो साS मन	मेंS क र केS	जोS जपे हS Sरि	नाS Sम Sको S
0	3	x	2

गम गम म- म-	गम म- म- पध	नीसां नीध पध नी-	धप मग ग म
कह ता हैS ब्रह्मा	नंद ब्रह्मा SS नंद	बिच समा येS गाS	SS SS सो ही
0	3	x	2

ध	प	म	रे	सा	ध	-	नी	सारे	ग	-	-	-	-	ग	म
प	र	म	प	द	पा	S	वे	गाS	S	S	S	S	S	सो	ही
0				3				x				2			

ध	प	म	रे	सा	ध	-	नी	सारे	ग	-	-	-	-
प	र	म	प	द	पा	S	वे	गाS	S	S	S	S	S
0				3				x				2	

4.1.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

पंडित जी के प्रिय भजनों में से एक हो, स्वामिनारायण संप्रदाय के महान संत एवं अष्ट कवियों में से एक, पूज्य ब्रह्मानन्द स्वामी(1772 – 1832)[1] रचित इस भजन को भीमसेन जी के गुरु, सवाई गंधर्व जी ने संगीत बद्ध किया है |[2] ब्रह्मानन्द जी लिखित, इस अद्भुत काव्य के वास्तविक अर्थ की दृष्टि से यह सार स्पष्ट होता है कि, जो मनुष्य सदा ईश्वर को याद करता है, उसका नाम जपता है वो अंतिम लक्ष्य तक पहुँच सकता है अर्थात दुनिया के सारे लौकिक सुख, उपभोग, तथा अभिमान को त्यागकर, शुद्ध भाव से गुरु चरणों में लीन रहेकर, जो एकांत में बैठकर ध्यानस्थ होता है; जन्म-मृत्यु की इस श्रृंखला से परे उसे ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त हो सकता है | यह भजन राग भैरवी में होने से, पंडित जी अक्सर इसे महफ़िल के अंत में गाते थे |

1985 में 'सहज योग' के एक कार्यक्रम में करीब 15 मिनट के लिए, यही भजन "Divine Prayer For Lord VISHNU" इस शीर्षक के अंतर्गत , पंडित जी ने **तीन ताल में गाया** था |[3] इस भजन को पंडित जी **कई बार 'भजनी ठेका'** लगाकर भी गाते थे |

[1] भट उपेन्द्र, दूरध्वनी से साक्षात्कार,

[2] भाटे आनंद,दूरध्वनी से साक्षात्कार,

[3] "Divine Prayer for Lord VISHNU" https://youtu.be/NFwpRXCx5VQ

इस विडिओ के मुताबिक, संवादिनी पर एक छोटे आलाप से 'भैरवी' की वातावरण निर्मिती की गई है और तुरंत पंडित जी ने 'तार सा' से 'जो भजे' की शुरुआत करके, भैरवी राग की बंदिश के समान (शैली) से इसे गाया है | ध्रुवपद(मुखडे) के अलग अलग शब्दों से शुरुआत करके, भजन के गर्भितार्थ अनुसार भाव प्रकट करते हुए पंडित जी ने कुछ समय केवल मुखड़ा गाया है; जिसमें ली हुई भैरवी की छोटी छोटी हरकतें, मुर्कीयाँ आदि भजन के भाव को अधिक आर्त बनाती है | इसी मुक्त आलापी दरमियान पंडित जी ने, 'हरि S S S' शब्द के दीर्घ उच्चारण में बिलासखानी तोड़ी की नजाकत भरी झलक दिखाई है | इस प्रकार से भैरवी में बिलासखानी का हल्का रंग भरते हुए, पंडित जी, करीब ढाई मिनट तक आलापी करते है | तत्पश्चात ताल की शुरुआत होते ही, श्रोताओं के मन लय के कोमल-मोहक बंधन में बँध जाते है | आगे, 'जो भजे' पर ताल के साथ पंडित ने किया हुआ भैरवी की सपाट तान का प्रयोग, भैरवी के वातावरण को अधिक प्रगाढ़ बनाता है | इस भजन का 'भाव' एवं 'शब्दों' को स्पष्ट करने के लिए पंडित जी ने, **'नाही संपूर्ण गद्य या सम्पूर्ण पद्य'** इस ढंग से अर्थात मराठी 'कीर्तन' की पारंपरिक शैली से सारे अंतरे गायें है |

प्रथम अंतरे में, 'देह के माला', हलके अभिनय के साथ बार बार गाते हुए; भजन के शब्द तथा भैरवी के स्वरों के माध्यम से, काव्य के भावार्थ को पंडित जी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते है और 'जो भजे' गाते हुए मुखडे में अहीर भैरव की झलक दिखाते है | इसी प्रकार से भावपूर्ण शब्द प्रयोग एवं शब्दोंचित मुखाकृति से, पंडित जी आगे के अंतरे प्रस्तुत करते है| आगे के अंतरे में, 'गुरु की महत्ता' दर्शाते हुए, "खाक हो" में पंडित जी शरणागती व्यक्त करने के लिए मध्य सप्तक की "ग म ग म" की स्वर संगती का तथा 'प्रभु मिल जाएगा' इस अंतिम सत्य को व्यक्त करने के लिए "ध नी सां" लेते हुए तार षडज (सां) पर पहुँचते है | 'छोड़ दुनिया के मजे..' इस अंतरे में, आदेश या आज्ञा का भाव दिखाने के लिए तार सप्तक के स्वरों का प्रयोग पंडित जी करते है | अंतिम अंतरे में 'दृढ़ भरोसा' में भैरवी अंग से 'ठोस' भाव को तथा 'कहता है ब्रह्मानंद' स्वयं ब्रह्मनंद को महसूस करते

हुए, अनुरूप स्वरसंगती से श्रोताओं को भी उसकी अनुभूति कराते है और तिहाई लेकर समापन करते है |

इस भजन में 'जो भजे हरि को सदा' की पुनरावृत्ति से, श्रोताओं के मन में जन्में जिज्ञासा के भाव का; 'सो ही परम पद पाएगा' इस फलश्रुति से सात्विक आनंद में परिवर्तन होता है अर्थात शास्त्रीय दृष्टि से, "पंचम" पर शुरू हुआ यह सुसंवाद "मध्य षड्ज" पर विराम लेता है और एक पूर्णता की अनुभूति कराता है | पंडित जी ने शब्दों को व्यक्त करते हुए बिच में रखा हुआ अवकाश; श्रोताओं के मन में काव्य के भावार्थ को अधिक सरलता से स्पष्ट करता है |

4.1.4 भक्ति रचना की लोकप्रियता

पंडित ने गाये हुए इस भजन को कई कलाकारों ने इसे गया है |

- पंडित उपेन्द्र भट (पंडित जी के जेष्ठ शिष्य), 132 वा हरिवल्लभ संगीत समारोह |[4]
- श्री आनंद भाटे (पंडितजी के जेष्ठ शिष्य) , मंच प्रदर्शन |[5]
- श्रीनिवास जोशी (पंडित जी के जेष्ठ पुत्र)|[6]
- पंडित जयतीर्थ मेवुंडी तथा कौशिकी चक्रवर्ती - भजनी ठेका लगाके मंजीरे के साथ; 'दिवाली पहाट', पुणे , मंच प्रदर्शन |[7]
- अनूप जलोटा , प्रभु दर्शन vol 4 – सीडी |[8]

[4] Upendrabhatmusic, https://www.youtube.com/watch?v=GMMll_X9LMY , 3/1/22

[5] Marathi Sound Lab, https://www.youtube.com/watch?v=X65IHcXvLAs, 11/10/21

[6] Shrinivas and Viraj Joshi, https://www.youtube.com/watch?v=SaY3d0gNRO0 ,10/1/22

[7] Indian Classical Music Collection, https://www.youtube.com/watch?v=TjrIJPksVDI, 10/1/22

[8] Anup Jalota – Topic, https://www.youtube.com/watch?v=NU4tVpjYOvw , 11/10/21

- राजेश्वरानन्द महाराज, प्रवचन देते हुए गाते है |[9]
- सुद्धा मल्होत्रा, लोकप्रिय भजन -सीडी |[10]
- मैथिली ठाकुर स्वयं हारमोनियम बजाकर गाती है और रिशव, आयची संगत करते है |[11]
- श्री ललित देशपांडे, दिवाली विशेष 'स्वरसाँज'|[12]
- शुभांगी सखलकर |[13]
- राजश्री मुखर्जी, 'मन मंदिर' एलबम |[14]
- तरंग कंदपाल, प्रयाग राज कुम्भ 2019 |[15]
- पं हरीश तिवारी, श्री अरबिन्द 'जन्म शताब्दी' समारोह |[16]
- श्री लोहला, 'जन्माष्टमी' समारोह |[17]
- ओमप्रकाश श्रीवास्तव, रामकृष्ण मठ, बेलूर |[18]

[9] जय गौर हरि, https://www.youtube.com/watch?v=ro1nhA7z7Wk, 1/2/22

[10] Sudha Malhotra –Topic, https://www.youtube.com/watch?v=n88ZsNVncSs , 10/1/22

[11] Ramesh Thakur, https://www.youtube.com/watch?v=8tDwIWPI2kQ ,10/1/22

[12] Lalit Deshpande, https://www.youtube.com/watch?v=r2FdvZxcEBE, 2/1/22

[13] Shubhangi sakhalkar, https://www.youtube.com/watch?v=k407shyTQpo ,10/1/22

[14] Rajasree Mukherjee – Topic, https://www.youtube.com/watch?v=4caRDeCfZew , 10/10/21

[15] Laxmi Kant Kandpal, https://www.youtube.com/watch?v=_ndoUwHYUQg , 2/1/22

[16] BAZM–E-KHAS, https://www.youtube.com/watch?v=tfEz5k1c7n0 , 2/1/22

[17] Sunil Lohala, https://www.youtube.com/watch?v=qBc3vR6BOcc , 1/2/22

[18] Ramkrishna Math and Ramkrishna Mission, Belur Math, https://www.youtube.com/watch?v=mb620Kbh1AY , 1/2/22

4.1.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्स और सीडीयों की सूची

पंडित जी ने प्रमुखतः मराठी, हिन्दी तथा कन्नड भाषा में भजन गायें, जिनकी अनेक कॅसेट्स, सीडी तथा यु ट्यूब रिकॉर्डिंग उपलब्ध है |

- भक्ताभिलाषा – हिन्दी भजन – यूनिवर्सल म्यूजिक -12 फ़रवरी 2009
- सुन भाई साधो – हिन्दी भजन – T series
- राम श्याम गुण गान – पं भीमसेन जोशी, लता मंगेशकर - HMV – 1985
- भक्ति संगीत – हिन्दी डिवोशनल एण्ड स्पिरिचुअल – नवरस रेकॉर्ड्स – 1999
- बेस्ट ऑफ दुर्गा भजन – हिन्दी भजन – Music Today – 2004
- साधो राम अनुपम हिन्दी राम भजन – Music Today – 1 जनवरी 2003
- भक्तिमाला, शक्ति vol 1 – भीमसेन जोशी, श्रुति सड़ोलिकर – Music Today – 1 जनवरी 1992
- जाता पंढरीसी – मराठी अभंगवाणी – सा रे ग म – 13 मार्च 2002
- अभंगवाणी – मराठी – HMV – 1 मार्च 1996
- लोकप्रिय अभंग - मराठी – पं भीमसेन जोशी, लता मंगेशकर – सारेगम – 1 जनवरी 1973
- सुंदर ते ध्यान – मराठी – भीमसेन जोशी, अनुराधा पौडवाल – Tseries – 2 जनवरी 1995
- माझे महेर पंढरी – मराठी – 18 नवंबर 2000
- राम श्याम गुन गान – हिन्दी - पं भीमसेन जोशी, लता मंगेशकर – सारेगम – 2002
- दासवानी – कन्नड भजन – HMV -1982
- भक्तिमाला राम Vol I – हिन्दी – Music Today

4.2. पंडित कुमार गंधर्व

4.2.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

निर्भय निर्गुण गुण रे गाऊंगा, गाऊंगा

मूल कमल दृढ़ आसन बाँधु जी

उलटी पवन चढ़ाऊंगा चढ़ाऊंगा ||

मन ममता को थिर कर लाऊँ जी

पाँचों तत्व मिलाऊँगा, मिलाऊँगा ||

इंगला पिंगला सुखमन नाड़ी जी

तिरवेनी पे हाँ न्हाऊँगा, न्हाऊँगा ||

पांच पच्चीसों पकड़ मँगाऊं जी

एक ही डोर लगाऊँगा, लगाऊँगा ||

शून्य शिखर पर अनहद बाजे जी

राग छत्तीस सुनाऊँगा, सुनाऊँगा ||

कहत कबीरा सुनो भाई साधो जी

जीत निशान घुराऊँगा, घुराऊँगा ||

भक्ति रचना :- निर्भय निर्गुण गुण रे गाऊँगा राग :- मांड

मूल गायक :- पं कुमार गंधर्व ताल :- सतवा (ठेका)

गीतकार :- संत कबीर संगीतकार :- पं कुमार गंधर्व

4.2.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धा	धीं	-	धा	धा	धीं	-	धा	धीं	-	धा	धा	धीं	-
X							X						
सां	सां	-	सां	-	सां	-	सां	सां	-	सां	-	नी	ध
नि	र	S	भ	S	य	S	नि	र	S	गु	S	न	S
X							X						
सां	सां	-	रें	-	-	-	सां	-	-	नी	-	ध	-
गु	ण	S	रे	S	S	S	गा	S	S	ऊँ	S	गा	S
X							X						
म	प	ध	प	-	-	-	प	-	-	धनी	पध	नी	सां
गा	ऊँ	S	गा	S	S	S	S	S	S	SS	SS	S	S
X							X						

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-
मू	S	S	ल	S	क	S	म	ल	S	ट	S	ढ़	S
X							X						

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-
आ	S	S	स	S	न	S	बाँ	S	S	धु	S	जी	S
X							X						

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-
उ	ल	S	टी	S	S	प	व	न	S	S	S	S	S
X							X						

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सरें
च	ढा	S	S	ऊँ	S	गा	च	ढ़ा	ऊँ	गाS	SS	SS	SS
X							X						

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-
म	S	S	न	S	म	S	म	ता	S	को	S	S	S
X							X						

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-
थि	S	S	र	S	क	र	ला	S	S	ऊँ	S	जी	S
X							X						

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-
पाँ	चों	S	S	S	S	त	S	त्व	S	S	S	S	S
X							X						

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सारें	
मि	ला	S	S	ऊँ	S	गा	मि	ला	ऊँ	गाS	SS	SS	SS	
X							X							

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-	
इं	S	ग	ला	S	S	S	पिं	ग	S	ला	S	S	S	
X							X							

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-	
सु	ख	S	म	S	न	S	ना	S	S	डी	S	जी	S	
X							X							

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-	
ति	र	S	वे	नी	S	पे	S	हाँ	S	S	S	S	S	
X							X							

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सारें	
न्हा	S	S	S	ऊँ	S	गा	न	हा	ऊँ	गाS	SS	SS	SS	
X							X							

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-	
पाँ	S	S	च	S	S	S	प	च्ची	S	सों	S	S	S	
X							X							

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-
प	क	S	ड़	S	मँ	S	गा	S	S	ऊँ	S	जी	S
X							X						

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-
ए	क	S	ही	S	S	डो	S	र	S	S	S	S	S
X							X						

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सारें
ल	गा	S	S	ऊँ	S	गा	ल	गा	ऊँ	गाS	SS	SS	SS
X							X						

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-
शू	S	S	न्य	S	शि	S	ख	र	प	S	र	S	S
X							X						

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-
अ	न	S	ह	S	द	S	बा	S	S	जे	S	जी	S
X							X						

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-
रा	ग	S	छ	S	S	त्ती	S	स	S	S	S	S	S
X							X						

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सारें	
सु	ना	S	S	ऊँ	S	गा	सु	ना	ऊँ	गाS	SS	SS	SS	
X							X							

प	प	-	ध	-	म	-	प	प	-	ध	-	ध	-	
क	S	S	ह	S	त	S	क	बी	S	रा	S	S	S	
X							X							

ध	ध	-	नी	-	नी	-	सां	रें	-	सां	-	सां	-	
सु	नों	S	भा	S	ई	S	सा	S	S	धो	S	जी	S	
X							X							

सां	सां	-	-	-	-	रें	सां	सां	-	-	-	-	-	
जि	त	S	नि	S	S	शा	S	न	S	S	S	S	S	
X							X							

सां	नी	-	-	ध	-	प	म	प	ध	सांनी	धप	धनी	सारें	
घु	रा	S	S	ऊँ	S	गा	घु	रा	ऊँ	गाS	SS	SS	SS	
X							X							

4.2.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

संत कबीर जी लिखित इस निर्गुणी भजन को कुमारजी ने कई कार्यक्रमों में गाया है; उनमें से 'दूरदर्शन स्टूडियो, नई दिल्ली', [19] में गाए हुए भजन का विश्लेषण करने हेतु शोधार्थी ने चयन किया है |

शास्त्रीय संगीत के विद्वान संगीतज्ञ एवं गुरु, पं हेमंत कोठारी ने बताया कि, "निर्गुण याने 'शून्य' और **कबीर** जी के भजनों में **'शून्य' निर्माण** करनेकी **अद्भुत क्षमता** है | वीरानता, निर्जनता यही निर्गुण की खासियत है | निर्गुण भजन गानेका अपना निराला ढंग होता है | भजन के 'स्वर' और 'लय' को उसके 'अर्थ' एवं 'भाव' के साथ व्यक्त करने के लिए उचित शब्दोंच्चारण होना आवश्यक है | अर्थात निर्गुण गाते समय **'अकेलेपन'** का निर्माण होना अत्यंत जरूरी है | इसी भजन को गाते समय "निरभय" में "भ" का योग्य उच्चार तथा "निरगुण"का सही उच्चार निर्भयता, निडरता का अहसास करता है |"[20]

यहाँ(इस विडिओ में) कुमार जी ने कोई भी आलापी किये बिना सीधे 'पधनीरेंगं' इस प्रकार से तार 'गंधार' को स्पर्श करके तार 'सां' पर से निरभय निरगुण... अर्थात भजन की शुरुआत की है, और अंत तक श्रोताओं को, इस लय के आवर्तन में दृढ़ता पूर्वक थाम के रखा है | इस भजन को कुमारजी ने, साढ़े तीन मात्रा के दीपचंदी पर आधारित, स्वयं बनाये हुए 'सतवा' ठेके में गाया है | सम्पूर्ण भजन में लग्गी या चलती का प्रयोग किये बिना मूल ठेका ही बजाया गया है | इस भजन को गाते हुए, कुमारजी ने अल्पावधि में ही; कोई बंधन या पाश की पर्वा किये बिना, अपनी मस्ती में परंतु अपने नियत स्थान की तरफ ठोस कदम उठाने वाले **'बेफ़िकर फकीर'** को श्रोताओं की समक्ष हूबहू

[19] ajab shahar – Kabir project, Nirbhay Nirgun Gun Re' sings Pt. Kumar Gandharva https://www.youtube.com/watch?v=V1tXJu-1O8U

[20] कोठारी हेमंत, साक्षात्कार जनवरी 18, 2022

खडा किया है | इस कृति में, उनकी पत्नी वसुंधरा जी ने उन्हे समर्थता से संगत की है | बीच बीच में कुमारजी, छोटी छोटी, सुस्पष्ट, नोकीली परन्तु अत्यंत सुरीली हरकते अपनी प्रभावी आवाज में गाते है | इस भजन के प्रथम अंतरे में, दृढ़ासन में बैठकर, मूलबंध लगाकर, वायु का ऊर्ध्वगमन करके; एक एक चक्र के भेदन कारनेका यथार्थ ज्ञान कबीर जी ने वर्णन किया है | इसी की पुष्टि करते हुए कुमारजी ने 'चढ़ाऊँगा' में "ढा" के ऊपर दिखाई हुई 'सम'; उनका अडिग विश्वास और संकल्प व्यक्त करती है | इसी के साथ साथ, प्रबल, तेजस्वी हरकतों के बीच कुमारजी ने छोडा हुआ अवकाश, श्रोताओं को भी ध्यान की अवस्था में ले जाता है | ताल के माध्यम से लयकारी करते हुए, कुमारजी स्वयं खिलते हुए नजर आते है और श्रोताओं को भी डोलने पर मजबूर करते है | भजन के दूसरे अंतरे में, इडा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ी के त्रिवेणी संगम स्थान पर स्नान करनेकी अपनी मनीषा व्यक्त करने के लिए; सबलता से किया हुआ 'हाँ' 'हाँ' का उच्चारण तथा उसे गाते हुए उनके मुख पर दिखाई देनेवाली संतुष्टि सुकून देती है | इसके बाद कुमारजी अपनी परिपक्व गायकी को शोभा देनेवाली छोटी छोटी ताने, टुकड़े लेकर एक बार फिर से अस्थायी का मुखड़ा गाकर अगले अंतरे की शुरुआत करते है| इस अंतरे में, निर्गुण के 'शून्य' में पहुचने के बाद अर्थात 'शून्य' का अहसास करने के बाद सुनाई देनेवाली 'अनहद' ध्वनि में कुमारजी खो जाते है |

इस भजन में कुमार जी ने हर एक अंतरे की सुरसंगति (नोटैशन) लगभग समान रखी है, अतः शब्दों से निकालने वाला 'निर्गुणी' का अर्थ(संवेदना) और अधिक पोषित होता है और 'कहत कबीरा' इस अंतिम अंतरे में, उस अलमस्त, आत्म निर्भर अनुभूति का श्रोताओं के मन को यथार्थ दर्शन होता है |

4.2.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

कुमार जी ने गाएँ हुए इस निर्गुणी भजन को आज भी कई कलाकार गा रहे है|

- राहुल देशपांडे जी का यह प्रिय भजन होते हुए उन्होंने कई कार्यक्रमों में गाया है |[21]
- महेश काले ने मेलबोर्न में मंच प्रदर्शन में, |[22]
- पुष्कर लेले ने स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में, 'कबीर काव्य और कुमारजी का संगीत निर्देशन' तथा प्राध्यापिका लिंडा हेस के विवरण, में प्रस्तुत किया है |[23]
- के. एम. संगीत संरक्षिका, चेन्नई में इसे सभी छात्रों ने कोरस में गाया|[24]
- पुरुषोत्तम तंवर जो उज्जैन मध्य प्रदेश से है, उन्होंने खुद अपनी लोक धुन की शैली में बनाया और मे 2020 में 'योग तथा प्राणायाम' के माध्यम से कोरोना से बचने के लिए इसे गाया |[25]
- ईशा फाउंडेशन, सदगुरु जी की उपस्थिती में कोएम्बतूर के कई कार्यक्रमों में गाया गया है| [26]
- महुआ मुखर्जी ने लॉक डाऊन के दौरान 'सहज योग' के कार्यक्रम में |[27]
- सरस्वती संगीत महाविद्यालय, रतलाम के एक कार्यक्रम में 9-10 साल के बालक - पंकज शर्मा ने |[28]
- अपूर्वा देशपांडे, सोसाइटी के मंच प्रदर्शन में |[29]

---

[21] Bhushan Mate, https://www.youtube.com/watch?v=fcuOB_NAfp8 ,15/2/22

News DNN, https://www.youtube.com/watch?v=5TYbzrUHJK8&t=134s

[22] S Chaudhary, https://www.youtube.com/watch?v=NjCr2a6Zlkg, 15/2/22

[23] Pushkar Lele, https://www.youtube.com/watch?v=-GZwpM9r7TI, 15/2/22

[24] LeVoyagedeMilesHeusse, https://www.youtube.com/watch?v=IDLcxyAWjO8 ,15/2/22

[25] kabir bhajan by purushottam tanwar, https://www.youtube.com/watch?v=WJD8xq_JCAc , 15/2/22

[26] Mystic Brain, https://www.youtube.com/watch?v=lLULlInAQxo 15/2/22

[27] Sahaj samadhan, https://www.youtube.com/watch?v=hpF-6iBPqwI, 15/2/22

[28] Pankaj Sharma, https://www.youtube.com/watch?v=JFvBCgI00qQ , 15/2/22

[29] The Eclectic Listener, https://www.youtube.com/watch?v=iR5XZJu54JY , 15/2/22

- अनूप जलोटा जी ने अपने ढंग से प्रस्तुत किया है |[30]
- वेदान्त भारद्वाज और बिंधुमालिनी |[31]
- News DNN के यु ट्यूब चेनल पर बच्चे कोई भी वाद्य का उपयोग किये बिना सिर्फ तालियाँ बजकर गा रहे है |[32]
- स्वानन्द भोरकर, मंच प्रदर्शन में |[33]
- अनाहत मंडली के युवाओं ने |[34]
- अर्चना मुले |[35]
- केतकी तेंड़ोलकर |[36]
- पं शिवकुमार, मंच प्रदर्शन में |[37]
- Pneuma, कबीर जी को श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए, कबीर जी के शब्दों का प्रतिपादन करके नएँ शब्दों के साथ, animation करके गाया है |[38]
- देवेश मित्तल, गिटार बजकर गा रहे है |[39]

[30] Anup Jalota – Topic, https://www.youtube.com/watch?v=stwGmlUi9z8, 15/2/22

[31] Vedanth Bharadwaj, https://www.youtube.com/watch?v=zTnMBncxlOU ,15/2/22

[32] News DNN, https://www.youtube.com/watch?v=YCwfH9UKQuU&t=197s ,15/3/22

[33] Nagesh D Rao, https://www.youtube.com/watch?v=GP5k4Gh0dH8 , 15/2/22

[34] Anahat – अनाहत, https://www.youtube.com/watch?v=5KhBYtLCbD0, 15/2/22

[35] Archana Mule, https://www.youtube.com/watch?v=WgY3WDOa3iM , 15/2/22

[36] Ketki Tendolkar, https://www.youtube.com/watch?v=G7ohFNK4U5c , 15/2/22

[37] Ananda 777, https://www.youtube.com/watch?v=jlsVyB_XoB4 , 15/2/22

[38] Pneuma, https://www.youtube.com/watch?v=DKWe7g1eOt4 , 12/2/22

[39] Devesh Mittal, https://www.youtube.com/watch?v=cl1Y2GG1VE0 , 15/2/22

4.2.5 भक्ति रचना संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्व और सीडीयों की सूची

- निरगुन के गुन- हिन्दी भजन - HMV– 1988
- अवधूत भजन्स, हिन्दी – सा रे ग म – 5 जनवरी 1995
- A Journey – कुमार गंधर्व, vol 2- सा रे ग म -16 फरवरी 2004
- भजन त्रिवेणी – कुमार गंधर्व, वसुंधरा कोमकली
- Bhajans by Linde – भीमसेन जोशी, कुमार गंधर्व – सारेगम – 2003
- Gandharv Gaan- The Magic of Kumar Gandhrv, Sagar music –2012

4.3 पंडित जितेंद्र अभिषेकी

4.3.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले |

शिव के मन शरण हो जब प्राण तन से निकले |

जिह्वा पर हर भजन हो, जब साँस तन से निकले |

शिव शिव शिवा उमा हो, या शिव उमा शिवा हो |

हर हर उन्ही रटन हो, जब प्राण तन से निकले |

शिव धाम शिव पूरी हो, विश्राम सुर सरी हो |

उस जल का आचमन हो, जब प्राण तन से निकले |

हृदय कमल शुची हो, बुद्धि मेरी विमल हो |

तृष्णा से शांत मन हो, जब प्राण तन से निकले |

भक्ति रचना :- इतना तो करना स्वामी	राग :- भैरवी
मूल गायक :- पं जितेंद्र अभिषेकी	ताल :- अद्धा (16 मात्रा)
गीतकार :- माहिती उपलब्ध नहीं है	संगीतकार :- पं जितेंद्र अभिषेकी

4.3.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
X				2				0				3			
								सां	सां	सां	-	नि	रें	सां	सां
								इ	त	ना	S	तो	क	र	ना
सां	-	नि	ध	-	-	ध	ध	धनि	सरें	गं	रें	सां	रें	रें	नि
स्वा	S	मी	S	S	S	ज	ब	प्राS	SS	S	S	ण	त	न	से
X				2				0				3			
सां	सां	सां	--	-	-	नि	नि	निसां	गंगं	सां	सां	निध	सांनि	धप	ध
नि	क	ले	SS	S	S	शि	व	केS	SS	S	S	SS	मS	Sन	श
X				2				0				3			
सां	सां	सां	--	-	-	प	ध	पध	निसां	रेंगं	रेंसां	सां	रें	रें	नि
र	ण	हो	S	S	S	ज	ब	प्राS	SS	S	S	ण	त	न	से
X				2				0				3			

सां सां सां --

नि क ले SS

सां सां सां सां नि सां - नि

शि व शि व शि वा S उ

सां - सांनि ध - - प - पध निसां रेंगं रें सां - रें नि

मा S होS S S S या S शिव SS SS S उ मा S शि

X 2 0 3

सां - सां - - - - - ध ध ध ध ध ध - नि

वा S हो S S S S S ह र ह र उ न्हि S र

X 2 0 3

सां नि ध - ध - प ध पध निसां रेंगं रें सां रें रें नि

ट न S S हो S ज ब प्राS SS S S ण त न से

X 2 0 3

सां सां सां --

नि क ले SS

इस भजन का द्वितीय एवं तृतीय अंतरा प्रथम अंतरे के समान है अतः नोटेशन लिखा नहीं |

4.3.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

पंडित जी को भैरवी राग अत्यंत प्रिय होने से, यह भजन वे अक्सर गाया करते थे | इस भजन के विश्लेषण हेतु, पंडित जी ने 'सवाई गंधर्व' मोहोत्सव के मंच प्रदर्शन में प्रस्तुत किये हुए विडिओ का शोधार्थी ने चयन किया है |[40]

इस नाथपंथी भजन को पंडित जी ने ही स्वरबद्ध किया है | इस विडिओ के मुताबिक, इस भजन की शुरुआत पंडित जी अपनी मखमली-कोमल एवं अत्यंत सुरीली आवाज में 'तार षड्ज ' से, 'इतना तो करना स्वामी' गाकर करते है | 'इतना तो करना स्वामी' के रटन में 'स्वामी' गाते हुए लिया हुआ **दीर्घ ईकार**; 'प्राण' शब्द पर ली हुई **'ध नी सा रें गं'** की छोटी तान(हरकत) तथा 'निकले' शब्द के "ले" के ऊपर मृदुता से लिया हुआ 'तार रिषभ'**(रें)** मन की प्रार्थना को अधिक **'आर्त'** बनाता है | पश्चात पंजाबी त्रिताल का ताल प्रवाह शुरू होता है और प्रार्थना की अभिव्यक्ति अत्यंत मोहक बनती है | 'मन' एवं 'शरन' का अनुप्रास सौन्दर्य निर्मिती करता है | बीच में कही पंडित जी सातवी मात्र से मुखड़ा गाते है | 'मन शरन हो' में पंडित जी ने गायें हुए 'ध .. प ग रे' की भूपाल तोड़ी की स्वर संगति तथा पश्चात लगाया हुआ 'शुद्ध गंधार' भजन की नजाकत बढ़ाते है | 'जिव्हा पर हर भजन हो' इस पंक्ति को गाते हुए पंडित जी 'बिलासखानी तोड़ी' की झलक दिखाते है | आगे अंतरा गाते हुए पंडित जी 'पंचम' के ऊपर स्थिर रहकर, 'शुद्ध धैवत' का प्रयोग करके 'भैरवी' से वातावरण को भर देते है | पंडित जी के अत्यंत भावपूर्ण, अर्थपूर्ण, सुस्पष्ट, शुद्ध एवं लय के अनुरूप शब्दोच्चार इस भजन के भाव को यथार्थ व्यक्त करते है |

[40] Hrushikesh Pathak, https://www.youtube.com/watch?v=nY4bmGsO6qM, 11/2/22

पंडित जी शास्त्रीय संगीत गानेवाले कलाकार होते हुए भी, उन्होंने **शास्त्रीय संगीत एवं भजन** गायकी का भेद अर्थात दोनों विधाओं की गायकी का 'मर्म' आत्मसात किया हुआ था अतः दोनों के **सही अनुपात** से प्रस्तुतीकरण करते थे और सामान्य जनता को भजन के 'भाव एवं शब्दों' में डुबो देते थे |

पश्चात तार सप्तक में लिया हुआ 'शुद्ध म...शुद्ध ग ..तीव्र म..' सौन्दर्य निर्मिती करते है और उनके पीछे पीछे दिखने वाली 'सालग वराली' और 'तोड़ी' की झलक अत्यंत मनमोहक प्रतीत होती है | तत्पश्चात पंडित जी **'शांत मन हो'** में **असीम शांति की अनुभूति** कराते है और बाद में लग्गी एवं तिहाई लेकर भजन का समापन करते है |

4.3.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

- श्रीमती अश्विनी भिड़े – देशपांडे |[41]
- शौनक अभिषेकी,संस्कृति आर्ट्स फेस्टिवल, नवंबर 17,2020 |[42]
- महेश काले, मंच प्रदर्शन |[43]
- विशाल धुमाल, खिद्रापूर मंदिर परिसर में बाँसुरी पर |[44]
- दलाल ब्रदर्स, निर्मल धाम, दिल्ली ऑक्टोबर 14, 2019 |[45]

[41] Classical Live Channel, https://www.youtube.com/watch?v=8ukh9hhu-yY , 11/2/22

[42] God Gifted Cameras, https://www.youtube.com/watch?v=rQ0JxRkZ3J8 , 11/2/22

[43] Daattaray Gaikwad, https://www.youtube.com/watch?v=2cuxhqgRdts , 11/2/22

[44] Vishal Dhumal, https://www.youtube.com/watch?v=eIWlAIbdrj4&t=16s , 11/2/22

[45] Vishwa Nirmala Dharma, https://www.youtube.com/watch?v=hjbWhJUDd58 , 11/2/22

4.3.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्व और सीडीयों की सूची

- भक्ति तरंग – मराठी – T सीरीज
- उठा उठा सकळिक – सा रे ग म मराठी
- भक्ति गीते – मराठी – 12 जून 2000 (संगीत – पं भीमसेन जोशी)
- अवघे पावन पंढरपूर – मराठी अभंग 20 अगस्त 1995
- स्वर तरंग -4 फरवरी 2012
- दिंडी – मराठी – 17 जनवरी 1989 – जितेंद्र अभिषेकी, अनुराधा पौडवाल

4.4 पंडित जसराज

4.4.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

माता कालिका माता कालिका

महाकाल महारानी, जगत जननी भवानी

खड्गमुण्ड खप्पर करधरणी

असुर हरणी जग निर्भय करणी

तरण तारिणी भक्त पालिका

दया दानी भवानी

माता कालिका माता कालिका

भक्ति रचना :- माता कालिका	राग :- अड़ाना
मूल गायक :- पं जसराज	ताल :- (अद्धा) तीनताल
गीतकार :- महाराज जयवंत सिंह वाघेला (सानंद बापू)	संगीतकार :- पं मणिराम

4.4.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
											प	प	पनी	पम	प
											मा	ता	काS	SS	ली
सां	-	-	-	ध	-	नी	-	सारें	-	सां	प	प	पनी	पम	प
का	S	S	S	S	S	S	S	SS	-	S	मा	ता	काS	SS	ली
X				2				0				3			
सां	-	-	-	ध	-	नी	प	म	म	-	प	-	म	-	म
का	S	S	S	S	S	S	S	म	हा	S	का	S	ल	S	म
X				2				0				3			
ग	–	म	–	रे	–	सा	-	सा	रे	म	प	प	ध	-	नी
हा	S	S	S	रा	S	नी	S	ज	ग	त	ज	न	नी	S	भ
X				2				0				3			
सां	-	सां	ध	नी	सां	सां	ध	नी	सारें	सां	प	प	पनी	पम	प
वा	s	नी	S	भ	वा	नी	S	भ	वाs	नी	मा	ता	काS	SS	ली
X				2				0				3			
								म	म	प	ध	नी	सां	-	सां
								ख	ड	ग	मुं	S	ड	S	ख

सां	सां	सां	सां	ध	नी	सां	सां	सां	ध	नी	सां	सां	सां	ध	नी
प्प	र	क	र	ध	र	नी	क	र	ध	र	नी	क	र	ध	र
X				2				0				3			

सां	-	-	-	-	-	-	-	प	प	रें	-	रें	रें	गंरें	सरें
नी	S	S	S	S	S	S	S	अ	सु	र	S	ह	र	नीS	SS
X				2				0				3			

पं	-	-	-	गं	मं	रें	सां	नी	नी	सां	सां	सां	नी	सरें	नीसां
S	S	S	S	S	S	S	S	ज	ग	नि	र	भ	य	कS	रS
X				2				0				3			

ध	-	-	नी	प	-	-	-	नी	नी	नी	सां	-	सां	सां	-
नी	S	S	S	S	S	S	S	त	र	ण	ता	S	रि	णी	S
X				2				0				3			

सां	-	सां	सां	-	सां	सां	-	रेंसां	सां	-	ध	-	ध	-	नी
भ	S	क्त	पा	-	लि	का	S	दS	या	S	दा	S	नी	S	भ
X				2				0				3			

सां	-	सां	ध	नी	सां	सां	ध	नी	सरें	सां	प	प	पनी	पम	प
वा	s	नी	S	भ	वा	नी	S	भ	वाs	नी	मा	ता	काS	SS	ली
X				2				0				3			

4.4.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

माता काली के परम भक्त तथा पंडित जी के आध्यात्मिक गुरु, 'महाराज जयवंत सिंह वाघेला' (सानंद बापू) ने इस भजन के शब्द लिखे है, जो सानंद बापू द्वारा लिखित गुजराती पुस्तक 'संगीत सौरभ' में उपलब्ध है |[46] जसराज जी के जेष्ठ भ्राता पंडित मणिराम जी ने इसे संगीतबद्ध किया है | इस भजन के **ध्रुव पद** में, काली माता के **रूप का** वर्णन तथा **अंतरे** में माँ के **गुणों** की स्तुति निहित है| पंडित जी का तथा श्रोताओं का अत्यंत प्रिय यह भजन, पंडित जी ने कई कार्यक्रमों में गाया है; जिनमें से यु ट्यूब के Art and Artistes के एक मंच प्रदर्शन को शोधार्थी ने विश्लेषण करने हेतु चुना है |[47]

यहाँ पंडित जी, भजन की सीधी शुरुआत करते है और तुरंत अड़ाना राग के 'तार षड्ज' की ओंर जाते हुए 'पंचम' पर सम दिखाते है |

इस भजन का ताल, अद्धा तीनताल होते हुए, इसका मुखड़ा बारहवी मात्र से शुरू होता है तथा **"कालिका"** शब्द चौदह-पंद्रह-सोलह-एक ऐसी यात्रा करके; **'चार में-तीन'** का आकर्षक लयस्वरूप धारण करता है | इस भजन में पंडित जी ने 'अड़ाना' राग के नूतन रूप का किया हुआ आविष्कार दिखाई देता है | अर्थात 'अड़ाना' याने उत्तरांग प्रधान एवं ओजस्वी, वीरता पूर्ण, प्रबल खड़े स्वरों का लगाव; जिसे पंडित जी ने वर्ज्य किया है, अतः कहीं कहीं धीर गंभीर 'दरबारी' की झलक दिखाई देती है | इस भजन में ली गई पखावज की संगत, और एक नवीनतम अनुभूति देती है | भजन की दूसरी पंक्ति गाने से पूर्व पंडित जी, सरगम की छोटी छोटी आलापी करके; 'तार षड्ज' के पास से शुरू किये गए भजन को 'मंद्र षड्ज' पर लेकर आते है – तीसरी पंक्ति वापस 'तार षड्ज' की ओंर,

[46] Revaayan , Mata Kalika , https://www.youtube.com/watch?v=abM4a6TC0WQ , 11/3/22
[47] Art and Artistes, https://www.youtube.com/watch?v=-Dd2OCr6zVA , 13/2/22

'भवानी' शब्द की तीहाई लेकर, 'म प ध नी सां' यह चलन लेकर मुखड़ा वापस 'तार षड्ज' की तरफ ले जाते है | भजन के अंतरे में पंडित जी **दो सम वाला मुखड़ा** गाते है; जिसमें 'खप्पर' के "प्प" पर प्रथम सम, 'करधरणी' की तिहाई एवं तुरंत "णी" के ऊपर दूसरी सम आती है | पश्चात 'तार रिषभ – मध्य रिषभ – मंद्र रिषभ' ऐसी ऋषभ की लंबी मींड़(घसीट) लेते है | इस भजन में पंडित जी काली माता के विशाल रूप एवं गुणों का वर्णन करने के लिए तीनों सप्तकोंका तथा 'तार पंचम' का उपयोग करते है जो एक अलग ही अनुभूति देता है | यहाँ पर पंडित जी, मेवाती घराने की अपनी गायकी का अवलंबन करते हुए, अपने कोमल, मधुर भावपूर्ण स्वरों के माध्यम से 'अड़ाना' का यथार्थ दर्शन कराते है |

पश्चात, फिर से एकबार 'भवानी' शब्द की तिहाई लेकर पंडित जी मुखड़ा पकड़ते है और अचानक लय बढ़ती है | इस बढी हुई लय में वापस सरगम और तिहाई का प्रयोग करते है | इस बढ़ी हुई लय में अंतरा गाते हुए पंडित जी बोल तान तथा आकार युक्त तान गाते है| **"माँ"** शब्द को बड़ी **आर्तता** से गाते हुए, अलग अलग प्रकार से आलाप करके **'भक्तिरस'** की **परिसीमा** तक पहुंचकर एकाएक 'तार षड्ज' पर बंदिश का समापन करते है | पंडित जी ने अपने अनगिनत कार्यक्रमों में इसे 'भजन या बंदिश' के रूप में करीब छह-सात मिनट से लेकर अट्ठाईस तीस मिनट तक गाया है |

4.4.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

पंडित जी ने गाया हुआ यह भजन लोकप्रिय होते हुए कई कलाकारों ने इसे गाया है |

- जैसे, केवल पंडित जी (अकेले)प्रस्तुतिकरण |[48]
- पंडित जसराज तथा जेष्ठ शिष्या त्रिप्ति मुखर्जी |[49]

[48] Saregama Music, https://www.youtube.com/watch?v=vg1TNcZD4GM , 14/2/22

[49] Strumm Spiritual , https://www.youtube.com/watch?v=4j4brANIdE8 ,14/1/22

- पंडित मणिराम, एक मंच प्रस्तुतिकरण |[50]
- श्रीमती कंकणा बैनर्जी ने अड़ाना में ही; परंतु पंडित जी से कुछ अलग ढंग से गया है |[51]
- श्वेता पंडित (पंडित जसराज जी की पोती) ने एलीफंटा फेस्टिवल में मंच प्रस्तुतिकरण |[52]
- स्मिती मिश्रा |[53]
- दीपम भचेच, बैजु गोंडालिया के साथ, दूरदर्शन गिरनार प्रस्तुति |[54]
- महाकाली पूजनोत्सव में पं नरेश सिन्हा, मंच प्रदर्शन |[55]
- श्रीमती पद्मजा फेणानी – जोगलेकर; शिवाजी पार्क दादर में, नवरात्रि उतत्सव में पति के साथ माताजी की पूजा करते हुए गाया है |[56]
- स्नेहदीप एस के, जसराज जी को श्रद्धांजलि देते हुए |[57]
- रंजनी और गायत्री कोई भी वाद्य बिना केवल ताली देकर; अपने घरमें नवरात्रि के अवसर पर |[58]

4.4.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्स और सीडीयों की सूची

- ओम म्यूजिक फॉर मेडिटेशन, डिवोंशनल, NA क्लासिकल औडियो कॅसेट्स, 2020
- द वेरी बेस्ट ऑफ पंडित जसराज Vol I – डिवोंशनल – म्यूजिक टूडै -2003
- द वेरी बेस्ट ऑफ पंडित जसराज Vol II – डिवोंशनल – म्यूजिक टूडै
- वृंदावन, पंडित जसराज -भजन्स - NA क्लासिकल औडियो कॅसेट्स, 2020
- भजन्स – पंडित जसराज – Music Today

[50] Sushant Soni, https://www.youtube.com/watch?v=eTyf-wYSfOQ, 16/1/22

[51] Kankana Banerjee – Topic, https://www.youtube.com/watch?v=o39Ts-6ycB4, 16/1/22
[52] Shweta Pandit, https://www.youtube.com/watch?v=OrwcMrCAX1Q, 16/1/22
[53] Arrowleaf Music, https://www.youtube.com/watch?v=s35OtgIXh2I, 15/1/22
[54] Dipam Bhachech, https://www.youtube.com/watch?v=kFgJKQvmP_o, 11/3/22
[55] Mithila Varnan, https://www.youtube.com/watch?v=jO4CqBffyH8, 16/1/22
[56] Padmaja Joglekar, https://www.youtube.com/watch?v=SX_ZBfe4oVk, 15/1/22
[57] Snehdeep SK Official, https://www.youtube.com/watch?v=m9mmFxNvY0k, 17/1/22

[58] Ranjani – Gayatri, https://www.youtube.com/watch?v=EKNf9oQ1wXQ, 17/1/22

- भक्ति माला, शक्ति Vol II – पंडित जसराज, अश्विनी भिड़े देशपांडे
- द वेरी बेस्ट ऑफ क्रिष्ण भजन - पंडित जसराज, पंडित भीमसेन जोशी, किशोरी आमोणकर – Music Today
- गोविंद दामोदर, लॉर्ड क्रिष्ण भजन्स, पंडित जसराज, पंडित भीमसेन जोशी, Music Today
- शिव गान, डिवोंशनल, Music Today
- माँ गंगा, डिवोंशनल, Music Today
- चंद्रघंटा, भक्ति किरण - Music Today
- कृष्ण शरणं मम - NA क्लासिकल औडियो कॅसेट्ट

इसिके साथ कृष्णाष्टक, रुद्राष्टक, शिवाष्टक, मधुराष्टक, उमा महेश्वर स्तोत्र, गायत्री मंत्र, गणपती स्तुति, साईंबाबा स्तवन आदि भक्ति साहित्य गायन की, पंडित जी की सिडीज एवं एल्बम उपलब्ध है |

4.5 गानसरस्वती किशोरी आमोणकर

4.5.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

अवघा रंग एक झाला|

रंगि रंगला श्रीरंग ||धृ ||

मी तू पण गेले वाया |

पाहता पंढरीच्या राया || 1 ||

नाही भेदाचे ते काम |

पळोनी गेले क्रोध काम || 2 ||

देही असोनी विदेही |

सदा समाधिस्त पाही || 3 ||

पाहते पाहणें गेले दूरी |

म्हणे चोखियाची महारी || 4 ||

भक्ति रचना :- अवघा रंग एक झाला राग :- भैरवी

मूल गायक :- किशोरी आमोणकर ताल :- धूमाळी भजनी ठेका

गीतकार :- संत सोयराबाई संगीतकार :- किशोरी आमोणकर

4.5.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8
			नीनी	ग	रे	सा	सा
			अव	घा	रं	S	ग
सा	-	-	सा	सा	-	-	सा
ए	S	S	क	झा	S	ला	S
X				o			
			सा	ग	-	म	म
			रं	गी	-	रं	ग
गम	गम	पमगम	रे	रे	सा	-	-
लाs	ss	ssss	श्री	S	रं	s	ग
X				o			
			ग	ग	-	ग	ग
			मी	तु	S	प	ण
रे	-	सा	नी	सा	रे	ग	-
गे	S	ले	S	वा	S	या	S
X				o			

				-	प	ध	प
				S	पा	S	ह

प	-	-	-	-	प	–	ध
ता	S	S	S	S	पं	S	ढ
X				o			

प	ध	प	मग	गम	गम	पमगम	- -
री	S	च्या	SS	राS	SS	SSSS	SS
X				o			

रे	-	सा	नीनी	ग	रे	सा	सा
या	S	S	अव	घा	रं	S	ग
X				o			

-	-	-	ध	ध	-	ध	ध
-	-	-	ना	ही	S	भे	दा
X				o			

म	ग	सा	ग	ध	S	ध	S
चे	S	ते	S	का	S	म	S
X				o			

म	पध	नीसां	रेंसां	नी	ध	प	म
प	ळोS	SS	नी	गे	S	ले	S
X				o			
ग	म	प	म	रे	-	सा	-
क्रो	S	S	ध	का	S	S	म
X				o			
			ग	ग	-	ग	ग
			दे	ही	S	अ	सो
रे	-	सा	नी	सा	रे	ग	-
नी	S	वि	S	दे	S	ही	S
X				o			
				-	प	ध	प
				S	स	S	दा
प	-	-	-	-	प	–	ध
स	S	S	S	S	मा	S	S
X				o			

प	ध	प	मग	गम	गम	पमगम	- -
धि	S	स्त	SS	पाS	SS	SSSS	SS
X				o			
रे	-	सा	नीनी	ग	रे	सा	सा
ही	S	S	अव	घा	रं	S	ग
X				o			
-	-	-	ध	ध	-	ध	ध
पा	ह	ते	पा	ह	S	णे	गे
X				o			
म	ग	सा	ग	ध	S	ध	S
ले	S	दू	री	म्ह	S	णे	S
X				o			
म	पध	नीसां	रेंसां	नी	ध	प	म
चों	SS	SS	खी	या	S	ची	S
X				o			
ग	म	प	म	रे	-	सा	-
म	S	हा	S	री	S	S	S
X				o			

4.5.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

उपरोक्त रचना, चौदहवी शती की मराठी शूद्र(महार) जाति की स्त्री संतकवि, तथा संत चोखामेळा की 'पत्नी एवं शिष्या' सोयराबाई ने लिखी है | सोयराबाई ने, 'छुआ छूत' के इस कठिन काल में, शूद्र जाति को सहनी पड़ती अनेक प्रकार की सामाजिक पीड़ा एवं क्लेशों से परे जाकर भगवत् भक्ति के बल पर, **'शरीर अशुद्ध हो सकता पर आत्मा कैसे अपवित्र होगी'** यह प्रश्न भगवान को पुछनेका धैर्य दिखाया | अद्वैत के चरण पर पहुँची हुई, स्वयं को अपने पति की 'चोखियाची महारी' संबोधनेवाली, सोयराबाई ने लिखे इस अभंग का यह गर्भितार्थ निकालता है की, भगवान श्रीरंग की कृपा से मन,बुद्धि, अहंकार सभी को एक ही रंग चढ़ गया है अर्थात सभी एक ही स्तर पर आ गये है; 'मै' और 'तु' का भेद अर्थात 'द्वैत' नष्ट हुआ है तथा काम क्रोध का नाश होकर सदा सर्वदा समाधि की अवस्था प्राप्त हुई है |

श्रीरंग(ईश्वर) के साथ 'अद्वैत' की अनुभूति से संतुष्टि पानेवाली सोयराबाई के भजन को संगीतबद्ध करने के लिए किशोरीताई ने यथोचित, अत्यंत मधुर एवं परिपूर्णता का अहसास करानेवाले 'भैरवी' राग का चयन किया है | किशोरी ताई ने अनेक कार्यक्रमों में इस भजन को गाया है उनमें से शोधार्थी ने निम्न लिखित ऑडियो का विश्लेषण हेतु चयन किया है |[59]

यहाँ ताई के विब्रोफोन से भैरवी की मंजुल ध्वनि सुनाई देती है और तुरंत अपने तालिमबद्ध , रियाजी, कसे हुए मधुर स्वर से ताई 'अवघा रंग'की शुरुआत करती है; फिर से एक उस्फुर्त 'अवघा रंग' और संथ गती से भजनी ठेका-तबले की शुरुआत होती है | पहले अंतरे की, 'मी तु पण गेले वाया' के पश्चात ताई ने लिया हुआ भैरवी का 'पारंपरिक आलाप' अत्यंत रोचक प्रतीत होता है; जिसके माध्यम से 'बाल गंधर्व' जी की परंपरागत, लोकप्रिय मराठी भैरवी, "प्रभु अजी गमला मनी तोशला" की याद

[59] Veeshal Nala, https://www.youtube.com/watch?v=5p5hy-2AjTA , 1/1/21

आती है |आगे की पंक्ति को गाते हुए ताई, इसी प्रकार से 'पंचम' को पहुंचकर छोटी छोटी हरकतों से 'षड्ज' पर आती है | इस भजन की भैरवी में; 'तीव्र मध्यम' को कण स्वर के रूप में, ताई ने प्रभावशाली ढंग से लिया है | दूसरे अंतरे में 'नाही भेदाचे ते काम' में भैरवी राग और भी खिलता है, विस्तारित होता है | पश्चात 'पळोनी गेले काम क्रोध' में "पळोनी"(अर्थात पलायन करना, भाग जाना) के ऊपर ली गई "पधनीसां" की छोटी हरकत; एकबार अद्वैत होने के बाद काम-क्रोध पलायन करते है, इस अर्थ को और अधिक स्पष्ट करती है | 'देही असोनी विदेही' इस अंतरे में, ताई ने इसके भावोचित 'बिलासखानी तोड़ी' की झलक दिखाई है | मानव शरीर में रहते हुए भी जो अशरीरी-निर्गुण तत्व (मेरे) अंदर समाधिस्त है, ऐसे सोयराबाई के कथनानुसार; बिलासखानी तोड़ी का कुल भैरवी होने से, इन **दो रागों के माध्यम से** (भैरवी में बिलासखानी समाया है)यह **रुपकार्थ** अत्यंत खूबसूरत रूप से स्पष्ट होता है | अंतिम पंक्ति 'पाहते पाहणे गेले दूरी, म्हणे चोखियाची महारी' अर्थात एकबार अद्वैत की अनुभूति होने के बाद, देखना-दिखाना कुछ रहता ही नहीं अपितु केवल परमानन्द और आत्मसंतुष्टि अवस्था रहती है; इस भाव को ताई ने अपने धीर गंभीर सुरों से अत्यंत सहजता से व्यक्त किया है| 'म्हणे चोखीयची महारी' इस पंक्ति में ताई 'तार षड्ज' पर पहुँचकर वापस आती है तथा फिर से 'अवघा रंग....श्रीरंग' गाकर सर्वत्र उस भाव की व्याप्ति करती है | इस भजन में ताई ने भैरवी के सुरों का किया हुआ कलात्मक उपयोग, अत्यंत भावपूर्ण शब्दोंच्चारण, उचित लय का 'भजनी ठेका' आदि से मन को मदहोश बनाने वाला ये **संगीतानुभव अंदर से 'असीम शांती' की अनुभूति** देता है | सम्पूर्ण महाराष्ट्र का ये अत्याधिक प्रिय भजन(अभंग) होने से ताई ने इसे कई कई बार गाया है और कई सारे कलाकारोंने भी इसे गाया है |

4.5.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

- शास्त्रीय संगीत की जेष्ठ गायिका श्रीमती आरती अंकलीकर – टिकेकर ने मंच प्रदर्शन में गाया है; जिसमें हारमोनियम, तबला, ढोलक, मंजीरा (चिपळया), बाँसुरी आदि का उपयोग किया है |[60]
- डॉ भरत बलवल्ली ने, श्रीमती अश्विनी भिड़े-देशपांडे जी के साथ एक भजन संध्या के मंच प्रदर्शन में |[61]
- पं रघुनन्दन पणशीकर (किशोरी ताई के जेष्ठ शिष्य), एक मंच प्रदर्शन में |[62]
- ताई की शिष्या श्रीमती देवकी पंडित ने मंच प्रदर्शन में |[63]
- आर्या आंबेकर, पुणे मंच प्रदर्शन; हारमोनियम,ऑर्गन,तबला,ढोलक,मंजीरे आदि वाद्यों के साथ में|[64]
- सावनी शेंडे, पुणे के एक मोहोत्सव के मंच प्रदर्शन में |[65]
- शरयु दाते, मराठी संगीत प्रतियोगिता में |[66]
- श्रीनिधि देशपांडे, मराठी संगीत प्रतियोगिता में |[67]
- शिवानी जोशी, आषाढी स्पेशल कार्यक्रम में मंच प्रदर्शन |[68]
- अंजना चंद्रन, मंच प्रदर्शन |[69]
- दो वारकरी, ग्यारस के अवसर पर कोविड़ 19 की बीमारी से मुक्त होने के लिए |[70]

[60] Vandana Digital Art, https://www.youtube.com/watch?v=6ZdtRlrYZXo, 3/3/21
[61] Bharat Balvalli, https://www.youtube.com/watch?v=MlOkNemhkZo, 14/2/21

[62] Roopaku, https://www.youtube.com/watch?v=FNzFjFEwWGE , 12/2/21
[63] Bipin Patil, https://www.youtube.com/watch?v=XUEoQlzjBGE , 3/3/21
[64] AaryaASOfficial, https://www.youtube.com/watch?v=c2M1ZfdENbc , 3/3/21
[65] Rupesh, https://www.youtube.com/watch?v=5J2OE4W6bCk, 3/3/21
[66] Music is My Life, https://www.youtube.com/watch?v=TLwXLcx7zu0, 3/3/21

[67] Praneeta Deshpande, https://www.youtube.com/watch?v=cdVe9OKMypI , 3/3/21
[68]Melodious Production, https://www.youtube.com/watch?v=J7D-axOv06k, 1/8/21
[69] TheOnlyChandran, https://www.youtube.com/watch?v=hMe6TWwbSs8 , 2/3/21
[70] Onkarpandit, https://www.youtube.com/watch?v=ZJqusNH7wb8 , 3/3/21

- श्रुति विश्वकर्मा-मराठे|[71]
- रसिका नातू, मंच प्रदर्शन |[72]
- गायत्री गायकवाड, केवल हारमोनियम बजाकर |[73]
- श्रीमती संध्या घाड़गे, हारमोनियम बजाकर अपने घर में |[74]
- भूपाली देशपांडे और साथी -कत्थक नृत्य की विद्यार्थिनी ने किशोरी ताई की रिकार्ड पर नृत्य सादर किया है|[75]
- हरियाणा की आनंदमूर्ति गुरुमा, अपने ढंग से गाती है |[76]
- कत्थक गुरु रेखाताई घोलप एवं उनकी शिष्याओं द्वारा किया हुआ नृत्य |[77]
- माधवी शेंद्रे, कोई भी वाद्य बिना |[78]
- पूनम नलकंडे-पाटील, मंच प्रदर्शन |[79]
- श्रीमती सुलभा किराड़, बाँसुरी पर प्रस्तुत किया |[80]
- विभा और वीर – दो छोटे बच्चे, विभा ने गाया तथा वीर ने हारमोनियम बजाया |[81]
- भक्ति पवार ने, अपने गुरुजी नाथराव नेरलकर जी के रचित राग 'तिलंग' में गाया है |[82]

[71] D'verb Experience, https://www.youtube.com/watch?v=7WiygccwNRg , 1/8/21
[72] Melodious Production https://www.youtube.com/watch?v=V9Axjaj60v8, 1/8/21

[73] Gayatree Gaikwad – Gulhane, https://www.youtube.com/watch?v=jwzzfjCr9yQ , 15/8/21
[74] Sandhya Ravindra Ghadge, https://www.youtube.com/watch?v=UhWXjmdmzHA ,15/8/21
[75] Bhupali Deshpande-Kulkarni, https://www.youtube.com/watch?v=_O3DTju6Sa0 , 1/8/21
[76] Gurumaa Ashram, https://www.youtube.com/watch?v=pVOwE78dXkA ,12/8/21
[77] Apoorva Nrutyalaya_Official_Kathak, https://www.youtube.com/watch?v=Zr2OwmwTyGg , 11/11/21

[78] माधवी शेंद्रे https://www.youtube.com/watch?v=DmRn8krpyOA, 11/11/21

[79] Poonam Nalkande, https://www.youtube.com/watch?v=IxcySoNucTw , 2/3/21

[80] Sulbha Kirad, https://www.youtube.com/watch?v=Zgf2QXSeuPw&t=150s, 3/8/21

[81] Manjiri Harischandrkar, https://www.youtube.com/watch?v=K7UfNt3Pa-M , 12/2/21

[82] Bhakti Sunil Pavar, https://www.youtube.com/watch?v=4JTJP6GJIJE , 5/10/21

- श्री रोहित बापट ने इस अभंग का हिन्दी में अनुवाद करके भावार्थ स्पष्ट किया है |[83]

4.5.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्स और सीडीयों की सूची

- म्हारों प्रणाम - मीरा भजन्स – हिन्दी – HMV, 1984
- घट घट में पंछी बोलता – हिन्दी – कबीर,मीरा,नारायण दास -संगीतकार एवं गायिका किशोरी आमोणकर
- Weekend Classic Radio Show | किशोरी आमोणकर स्पेशल | अवघा रंग एक |
- पंढरीचे सुख – सा रे ग म मराठी
- द बेस्ट ऑफ कृष्ण भजन्स, हिन्दी – Music Today
- अवचिता परिमळु - सा रे ग म मराठी -1998
- भक्तिमाला II, विष्णुसहस्रनामावली – 2005
- भजन कलेक्शन – हिन्दी – Music Today-2003

[83] Rohit Bapat, https://www.youtube.com/watch?v=uCDrrd_3TYc ,5/10/21

4.6 डॉ वीणा सहस्रबुद्धे

4.6.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

घट घट में पंछी बोलता

घट घट में पंछी बोलता, पंछी बोलता....

आप ही डंडी, आप तराजू

आप ही बैठा तोलता ||

आप ही माली, आप बगीचा

आप ही कलियाँ तोड़ता ||

सब बन में सब आप बिराजे

जड़ चेतना में डोलता ||

कहत कबीर सुनो भाई साधो

मन की कुंडी खोलता ||

भक्ति रचना :- घट घट में पंछी बोलता राग :- भटियार

मूल गायक :- वीणा सहस्रबुद्धे ताल :- दीपचंदी

गीतकार :- संत कबीर संगीतकार :- पं काशीनाथ बोडस

4.6.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धा	धिं	-	धा	धा	तिं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
ध	-	प	ग	-	-	रे	सा	-	-	सा	-	सा	-
घ	S	ट	घ	S	S	ट	में	S	S	पं	S	छी	-
X			2				0			3			
ध	-	ध	रे	-	-	-	-	-	-	सा	-	रेग	-
बों	S	ल	ता	S	S	S	S	S	S	पं	S	छी	-
X			2				0			3			
रे	-	पग	रेसा	-	-	-							
बों	S	ल	ताS	S	S	S							
सा	-	-	ग	प	प	-	प	-	प	प	-	-	-
आ	S	S	प	S	ही	S	ड	S	ण्	डी	S	S	S
X			2				0			3			
ग	-	-	प	-	-	ध	पध	धसा	ध	प	ग	-	रे
आ	S	S	प	S	S	त	राS	SS	S	जू	S	S	S
X			2				0			3			

ग	-	प	ध	सां	सां	-	सां	-	-	-	-	सां	-
आ	S	S	प	S	ही	S	बै	S	S	S	S	ठा	-
X			2				0			3			

सां	-	रें	रें	-	-	-	सां	-	ध	प	-	गप	ध
तो	S	ल	ता	S	S	S	S	S	S	S	S	SS	S
X			2				0			3			

म	म	-	म	-	म	ग	प	-	-	प	-	प	-
स	ब	S	ब	S	न	S	में	S	S	स	S	ब	S
X			2				0			3			

प	-	-	प	-	-	प	प	धनि	धनि	ध	निध	निध	पम
आ	S	S	प	S	S	बि	रा	SS	SS	जे	SS	SS	SS
X			2				0			3			

ध	ध	-	रें	-	-	सां	सां	-	-	-	-	सां	-
ज	ड	S	चे	S	S	त	न	S	S	S	S	में	S
X			2				0			3			

सां	-	रें	सां	-	-	-	सां	-	ध	प	-	गप	ध
डो	S	ल	ता	S	S	S	S	S	S	S	S	SS	S
X			2				0			3			

ग	प	-	ध	सां	-	सां	सां	-	-	-	-	सां	-
क	ह	S	त	S	S	क	बि	S	S	S	S	रा	S
X			2				0			3			

प	ध	रें	सां	-	सां	-	पध	सरें	गरें	सांनि	धप	मग	रेंसा
सु	नों	S	भा	S	ई	S	साS	SS	SS	धोS	SS	SS	SS
X			2				0			3			

							<u>रें</u>	-	<u>रें</u>	<u>रें</u>	-	-	-
							म	S	न	की	S	S	S
							0			3			

सरें	सरें	गरें	गरें	सां	सां	-	सां	-	रें	सां	-	-	-
कुंS	SS	SS	SS	S	डी	S	खों	S	ल	ता	-	-	-
X			2				0			3			

सां	-	<u>रें</u>	सां	-	-	-	सां	-	ध	प	-	गप	ध
खों	S	ल	ता	S	S	S	S	S	S	S	S	SS	S
X			2				0			3			

इस भजन का द्वितीय अंतरा प्रथम अंतरे के समान है अतः नोटेशन लिखा नहीं

4.6.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

पंडित काशीनाथ बोडस(तात्या) द्वारा स्वरबद्ध किया हुआ यह निर्गुणी कबीर भजन, वीणा ताई महफिलों में अक्सर गाती थी | **कबीर** जी के भजनों में **गहरा गर्भितार्थ** होता है | इस भजन में कबीर जी बताते है कि, ईश्वर एक ही है, वह स्वयं ही तराजू, तोलने वाला, कलियाँ, बगीचा, माली अर्थात प्रत्येक जड़ एवं चेतन वस्तु में विराजमान है | परंतु प्रत्येक आत्मा की अपनी एक अंदर की आवाज है, जीसे हर एक को सुनकर ईश्वर प्राप्ति का ज्ञान पाना है | अथवा इस पूरी सृष्टि का सर्जनहार- सृष्टिकर्ता तथा उसका नियंत्रक एक ही ईश्वर है, जो जड़ चेतन सभी में एक ही चैतन्य के रूप में है, यह ज्ञान सभी को होना जरूरी है |

विणा ताई ने इस भजन को अनेक बार प्रस्तुत किया है, उनमें से शोधार्थी ने निम्नलिखित ऑडियो का विश्लेषण हेतु चयन किया है |[84] इस ऑडिओ के अनुसार, वीणाताई प्रारम्भिक आलापी में 'पंचम' तथा तार 'रिषभ' (रें) की संगति लेती है अतः देशकार की झलक दिखाई देती है | परंतु पश्चात 'निषाद' की सहाय्यता से 'पंचम' के ऊपर स्थायी हो जाती है | और अचानक से, अनपेक्षित **'कोमल रे'** का दर्शन होता है जो **सम्पूर्ण वायुमंडल में** छा जाता है और श्रोता मुग्ध हो जाते है | मध्य सप्तक के 'धैवत से' से बंदिश की शुरुआत होती है तथा मंद्र सप्तक के 'धैवत' के ऊपर वीणाताई सम दिखाती है | अब **'मारवा' के अंग से 'भटियार'** राग खिलने लगता है | 'जड़ चेतन में डोलता' इस वाक्य में "डोलता" शब्द पर ली हुई "ध सां रें " की संगती श्रोताओं को डोलने पर मजबूर कर देती है | ताल के आधार से आगे के अंतरे के शब्द दृष्टिगोचर होते है | अंत में 'कहत कबीर' गाते हुए, एक छोटी सपाट हरकत के साथ तार सप्तक का 'शुद्ध रिषभ - रें' मन को मोहित करता है | पश्चात 'सां रें गं' की स्वर संगती के कुछ दो तीन आलाप करके वापस वही आरपार जानेवाला तार

[84] Vibhuti Productions, https://www.youtube.com/watch?v=GTak2QxKXyw , 1/2/22

सप्तक का कोमल रिषभ 'रें' भटियार की पुष्टि करता है और यही भटियार की गूंज में भजन की समाप्ति होती है |

4.6.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

यह भजन, गानसरस्वती किशोरी आमोणकरजी ने स्वयं, उनका अत्यंत प्रिय राग 'भूप' में स्वरबद्ध करके अपने कई कार्यक्रमों में गाया है |[85] इसके अलावा कई कलाकारों ने तथा आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले संतों ने इसे गाया है |

- आर्य समाज की साध्वी उत्तम यति ने वैदिक भजन के रूप में गया है |[86]
- अंतर्नाद, The rhythm of the soul [87]
- श्रीमती स्वर्णिमा गुसाईं (गानसरस्वती श्रीमती किशोरी आमोणकर की शिष्या) एक मंच प्रदर्शन|[88]
- श्रीमती रुचिरा केदार, एक मंच प्रदर्शन |[89]
- श्रीमती भारती विश्वनाथ |[90]
- प्रतीक गोथवाल, जैसलमेर रणोत्सव 2021|[91]
- जयदीप वैद्य, 'स्वरहोत्र' कार्यक्रम में मंच प्रदर्शन |[92]
- शैलेन्द्र कुमार शर्मा, कबीर मोहोत्सव कार्यक्रम में मंच प्रदर्शन |[93]
- चिन्मयी त्रिपाठी |[94]

[85] Hemant Kothikar, https://www.youtube.com/watch?v=hJ0aApZMjIs, 16/2/22
[86] Arya Samaj Vaidik Bhajan, https://www.youtube.com/watch?v=lp4RDTAK0kA, 16/2/22
[87] Antarnaad – The Rhythm Of Soul, https://www.youtube.com/watch?v=CdbKFec6wnI ,16/2/22
[88] Swarnima Gusain , https://www.youtube.com/watch?v=FdvxPC2FW_c , 16/2/22
[89] Ruchira Kedar, https://www.youtube.com/watch?v=_wnZua-Lev8 ,16/2/22
[90] Bharati Vishwanathn, https://www.youtube.com/watch?v=7nCEXi0-PtY,16/2/22
[91] Pratik Gothwal , https://www.youtube.com/watch?v=Rl7zUCSQg2U,16/2/22
[92] Yogesh Ambekar, https://www.youtube.com/watch?v=AZ8rOPjNBuo ,16/2/22
[93] Shailendra Kumar Sharma, https://www.youtube.com/watch?v=KeFeQnZ1lEI,16/2/22
[94] Chinmayi Tripathi, https://www.youtube.com/watch?v=8HIiew4_DSg, 16/2/22

- देबद्रीता भट्टाचारीजी |[95]
- कबीर कैफै, मुंबई, मालवा कबीर यात्रा मंच प्रदर्शन |[96]
- शशिका मूरुथ |[97]
- मुख्तियार अली, बीकानेर मंच प्रदर्शन में, ऑर्गन, तबला, ढोलक, हारमोनियम तथा सितार के सुन्दर प्रयोग के साथ शास्त्रीय संगीत के राग पर आधारित प्रस्तुतिकरण |[98]
- पूर्वा जोशी |[99]
- मेघा इंगले |[100]
- श्रद्धा हत्तंगड़ी मेहता |[101]
- रोशा फुएल (दस बारा साल की बच्ची, हारमोनियम बजाकर)|[102]
- श्रीमती मेघना घेरकर (श्रीमती शैला दातार की शिष्या) |[103]
- सोनू माथुर |[104]
- ओशो पूर्णिमा उत्सव , की बोर्ड और गिटार के साथ |[105]
- प्राजक्ता सावरकर - शिंदे, मंच प्रदर्शन में |[106]

[95] Debadrita Bhattacharjee, https://www.youtube.com/watch?v=rZwP7QBj0Yk , 16/2/22
[96] Santkumar Moury, https://www.youtube.com/watch?v=EIz8BQ3ZQ9Q , 16/2/22
[97] Shashika Mooruth Official, https://www.youtube.com/watch?v=ztiXeg9OkIk ,16/2/22

[98] Bhanu Sound Makrana, https://www.youtube.com/watch?v=aaowneJjZtU ,16/2/22
[99] Poorva Joshi, https://www.youtube.com/watch?v=zZEro4pU7u4, 16/2/22
[100] Megha Ingle, https://www.youtube.com/watch?v=1SilB1F6QWE, 16/2/22
[101] Shrddha Hattandadi Mehta –Topic, https://www.youtube.com/watch?v=bi3XrvQeZ-A ,16/2/22
[102] Music Lover, https://www.youtube.com/watch?v=dc2HTBL9koU, 16/2/22
[103] Taurya Pritishthan, https://www.youtube.com/watch?v=RdPbEVUQhrk , 16/2/22
[104] Kanu Mathur, https://www.youtube.com/watch?v=wEQqWOFrI8w, 16/2/22
[105] Avi ramawat music, https://www.youtube.com/watch?v=zOFQxK5SAfs , 16/2/22
[106] Prajakta Savarkar Shinde, https://www.youtube.com/watch?v=ZL2nSMesiQc ,16/2/22

4.6.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्व और सीडीयों की सूची

- भक्तिमाला – गणेश वॉल्यूम I और II, वीणा सहस्त्रबुद्धे – Music Today –जनवरी 2011
- भक्तिमाला - राम वॉल्यूम I और II, वीणा सहस्त्रबुद्धे – Music Today –सितंबर 2013
- अनुराग – क्रिष्ण भजन्स – वीणा सहस्त्रबुद्धे, कौशिकी चक्रवर्ती – टाइम्स म्यूजिक – जनवरी 2013
- काली – हिन्दी – डिवोंशनल म्यूजिक – टाइम्स – जनवरी 2008
- सरस्वती उपासना – स्तुति और स्तोत्र – सोनी म्यूजिक – अक्तूबर 2014
- हारी ॐ तत्सत – लॉर्ड नेम एण्ड मंत्र - वीणा सहस्त्रबुद्धे – Music Today –सितंबर 2013
- श्रीकृष्ण दर्शन – हिन्दी भजन्स, स्तोत्र - टाइम्स म्यूजिक

4.7 पंडित राजन साजन मिश्र

4.7.1 भक्ति रचना के शब्द तथा सामान्य माहिती

रचना के शब्द

चलो मन वृंदावन की ओर

प्रेम का रस जहाँ छलके है,

कृष्ण नाम से भोर .....

भक्ति की रीत जहाँ पल पल है,

प्रेम प्रीति की डोर .....

राधे राधे जपते जपते,

दिख जाएं चितचोर .....

चलो मन वृंदावन की ओर !!!

उषा की लाली के संग जहाँ

कृष्ण कथा रस बरसे .....

राधा रास बिहारी के मंदिर,

जाते मानव हरसे ....

बृज की रज़ है चंदन जैसी,

मन हो जाय विभोर .....

चलो मन वृंदावन की ओर !!!

भक्ति रचना :- चलो मन वृंदावन की ओंर राग :- नट भैरव

मूल गायक :- पं राजन साजन मिश्र ताल :- कहेरवा

गीतकार :- नारायण अग्रवाल संगीतकार :- पं राजन मिश्र

4.7.2 भक्ति रचना का नोटैशन

1	2	3	4	5	6	7	8
			प	पध्	निसांनि	ध्प	ध्प
			च	लोS	SSS	मS	नS
X				0			
म	म	-	पम	रे	ग	म	ध
S	ब्रिं	S	दाS	ब	न	की	S
X				0			
प	-	प	-	-	-	-	-
ओ	S	र	S	S	S	S	S
X				0			
-	म	-	मम	म	म	-	म
-	प्रे	S	मका	र	स	S	ज
X				0			
प	-	-	पप	ध	प	ध्प	म
हाँ	S	S	छल	केS	S	हैS	S
X				0			
	नि	नि	नि	-	नि	रें	-
	क्रि	ष्न	ना	S	म	से	S
X				0			

रें	-	प	प	पध्	निसांनि	ध्प	ध्प
भो	S	र	च	लोS	SSS	मS	नS
X				0			

	म	-म	म	प	-	-	प,प
	भ	Sक्ति	की	रि	S	S	त,ज
X				0			

प	-	-	ध्प	प	प	प	-
हाँ	S	S	पल	प	ल	है	S
X				0			

-	ध् नि्	-	ध्प	-	-	-	-
S	डोS	S	रS	S	S	S	S
X				0			

-	प	-प	-	-	नि	-नि	-
S	रा	Sधे	S	S	रा	Sधे	S
X				0			

-	सांसां	-सां	-	-	सांसां	-सां	-
S	जप	Sते	S	S	जप	Sते	S
X				0			

	सां	सां	सां	सां	-	प	पध़
	दि	ख	जा	एँ	S	S	चित
X				0			

नि	-	ध़प	प	पध़	निरेंसांनि	ध़प	ध़प
चो	S	रS	च	लोS	SSS	मS	नS
X				0			

	रे़	-	रे़	रे़	-	-	रे़
	उ	S	षा	की	S	S	ला
X				0			

-	सा	रे़	पमगरे़	रे	सा	सा	सा
S	ली	S	केSSS	सं	ग	ज	हाँ
X				0			

	नि	-	सासा	सा	-	-,रे़	ग
	क्रि	S	ष्ण क	था	S	S, र	स
X				0			

रे	सा	सा	-	-	-	-	-
ब	र	से	S	S	S	S	S
X				0			

	म	-	म	-	म	-	म, म
	रा	S	धा	S	रा	S	स, बि
X				0			
म	-म	ग	ग	प	-	प	प
हा	Sरि	S	के	मं	S	दि	र
X				0			
	नि	-	नि	-	<u>ध</u>	<u>नि</u>	<u>ध</u>प
	जा	S	ते	S	म	न	वाS
X				0			
प	प	प	-	-	-	-	-
ह	र	से	S				
X				0			
-	पप	-ध	<u>नि</u>	-	<u>ध</u> <u>नि</u>	- <u>ध</u>	प
S	ब्रिज	Sकी	S	S	माS	Sटी	S
X				0			
-	पप	-ध	<u>नि</u>	-	<u>ध</u> <u>नि</u>	- <u>ध</u>	प
	चंS	Sद	न	S	जैS	Sसी	S
X				0			

	सां	सासां	-	सां	-	प	ध
	म	नहो	S	जा	S	ए	वि
X				0			
नि	-	धप	प	पध	निसांनि	धप	धप
भो	S	रS	च	लोS	SSS	मS	नS
X				0			

4.7.3 भक्ति रचना का विश्लेषण

नारायण अग्रवाल जी द्वारा लिखित इस भजन में, कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत, पवित्र वृंदावन धाम का वर्णन किया है | संक्षेप में इस भजन का अर्थ देखे तो यह प्रतीत होता है कि, **वृंदावन की हर एक चीज 'कृष्ण' नाम से जुड़ी है** | अर्थात वृंदावन में कृष्णप्रेम रूपी 'भक्तिरस' का सदा आधिक्य होने से वह 'छलकता' रहता है, वहाँ 'भोर' कृष्ण नाम से होती है, भोर होते ही 'कृष्ण' की कथा होती है, कथा सुनते सुनते या 'राधे राधे' जपते हुए, मन को विभोर करनेवाले 'कृष्ण' के ही दर्शन होते है; इतनाही नहीं बल्कि वहाँ की मिट्टी भी चंदन समान प्रतीत होती है |

पंडित राजन साजन मिश्र ने इस भजन को कई कार्यक्रमों में गाया है, उनमे से आनंदमूर्ति गुरुमा के 'ऋषि चैतन्य आश्रम' के 'सन्यास दिवस समारोह' सितंबर 1,2016 के मंच प्रदर्शन में गाए हुए भजन का विडिओ शोधार्थी ने विश्लेषण हेतु चुना है | [107]

इस भजन को गाते हुए, राजन जी ने शुरुआत में ही 'तार षड्ज' का प्रयोग किया है | 'चलो मन' इन शब्दों के उपयोग से प्रारम्भिक आलाप करते हुए, राजन जी और साजन जी दोनों ने **'नट**

[107] Gurumaa Ashram, https://www.youtube.com/watch?v=vWvMPXGd7Ig

भैरव' राग से वायुमंडल को भर दिया है | 'तार षड्ज' से राजन जी, मध्य सप्तक के 'मध्यम' पर आते है और अत्यंत सुंदर पद्धति से, कोमल निषाद के प्रयोग से पंचम पर स्थिर होते है | आगे बढ़ते हुए तार सप्तक का रे लगाकर ' रें नि ध म रे' इस प्रकार से नीचे आते है और वापस 'रे ग म ध नि ध प' में कोमल निषाद का कण लेकर पंचम पर आकर, भजन की पंक्ति को पूर्ण करते है | पश्चात, 'प्रेम का रस जहाँ छलके है' यह पंक्ति गाते हुए "छलके" शब्द का इतना भावपूर्ण मनमोहक उच्चार करते है कि जिसमें से 'छलकना' यह भाव सुस्पष्ट होता है | **मध्यम, पंचम एवं कोमल धैवत के मिश्रण से** साधी हुई यह कलात्मकता श्रोताओं के मन को एक पल में भजन के **'भावविश्व'** में लेकर जाती है| इसके आगे, 'कृष्णनाम से भोर' को नि पर गाते हुए वापस 'तार रिषभ'(रें) पर पहुँचते है और 'तार षड्ज' पर "ओर" गाते हुए मध्य पंचम पर "चलो" की पुकार करते हुए शुद्ध निषाद पर (प ध नी) स्थायी होते है | इसे करते हुए, कुशलता पूर्वक रागानुसंधान साधते हुए भावानुसंधान एवं अर्थानुसंधान का अद्वितीय संयोग दिखते हुए 'राधे राधे जपत' यह पंक्ति गाते है | यहाँ पर राजन साजन जी ने, अपनी **'शास्त्रीय' गायकी का उपयोग करके, आम जनता को 'भक्तिरस' में डूबा दिया है** | इन्होंने गाए हुए भजन के शब्दों का श्रोताओं के मन पर ऐसा परिणाम होता है कि वे 'भावविश्व' में चले जाते है; जो महफिल में 'भक्ति संगीत' गाने वाले कलाकार से अपेक्षित होता है |

आम लोगों के दृष्टिकोण से, अपने कर्मठ नियमों के कारण अनाकलनीय एवं क्लिष्ट लगनेवाला शास्त्रीय संगीत, यहाँ भजन में भक्त को भावमूर्ति के साथ जोड़ने में सफल रहता है; यही शास्त्रीय संगीत की उपलब्धि है |

इस भजन में स्थायी तथा हर एक अंतरे के बाद, चार अंतरे की लग्गी बजाई गई है | रचना के समापन में, लय की चौगून करके, वादक अपनी कला प्रदर्शन करता है तथा अंत में चक्रदार तिहाई से समापन होता है |

4.7.4 भक्ति रचना कि लोकप्रियता

इस भजन को, कई कथा-कीर्तनों के कार्यक्रमों में अलग अलग प्रवचनकारों ने गाया है; जिनमें कृष्णभक्ति भाव को कायम रखते हुए भजन के शब्द एवं धुन में परिवर्तन किया है| यहाँ पर शोधार्थी ने केवल, पं राजन साजन जी द्वारा गाए गए भजन को ही, अर्थात नारायण अग्रवाल की द्वारा लिखित भजन को ही जिन लोगों ने गाया है, उसका जिक्र किया है |

- डॉ मंदाकिनी लाहिरी- पं राजन साजन मिश्र की जेष्ठ शिष्या |[108]
- डॉ सोमा घोष, भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ ने अपने ढंग से स्वरबद्ध किया है |[109]
- धृति चैटर्जी |[110]
- ब्रज रसिक मधुकर जी, स्वामी रामतीर्थ मिशन आश्रम |[111]
- आनंद देशमुख |[112]

[108] Dr Mandakini Lahiri, https://www.youtube.com/watch?v=RZdT3H30bZc ,1/1/22
[109] Sanskar TV, https://www.youtube.com/watch?v=wsz8ri37uT0 ,1/1/22

[110] Dhriti Chatterjee, https://www.youtube.com/watch?v=e9eOb6k9I1I ,1/1/22
[111] JSR MADHUKAR Braj Rasik, https://www.youtube.com/watch?v=u8C3YlfRcmQ ,1/1/22
[112] Anand Deshmukh, https://www.youtube.com/watch?v=9sy-Tg5v9Tk , 1/1/22

4.7.5 भक्ति संगीत संबंधित प्रसिद्ध कॅसेट्व और सीडीयों की सूची

- द बेस्ट ऑफ राजन साजन मिश्र, हिन्दी भजन्स – Biswas Records, 1995
- भजन्स, भक्तिमाला -शिवा vol I - राजन साजन मिश्र, श्रुति सडोलिकार – Music Today - 9191
- भजन्स, भक्तिमाला - राम vol II - राजन साजन मिश्र, वीणा सहस्त्रबुद्धे – Music Today - 9191
- भजन्स, भक्तिमाला -हनुमान vol I - राजन साजन मिश्र, गुंडेचा ब्रदर्स – Music Today – 9191
- ॐ – म्यूजिक फॉर मेडिटेशन - NA क्लासिकल्स – 1999
- ओम नमः शिवाय – विथ महामृत्युंजय मंत्र - NA क्लासिकल्स – 1999
- राम क्रिष्ण उपासना – हिन्दी - NA क्लासिकल्स – 2020
- दुर्गा सप्तशती vol I, II,III - Music Today – 2016
- 'भोर की बेला' – हिन्दी भजन्स Music Today – 2013
- Great Saints of India – हिन्दी भजन्स (कबीर, मीरा, तुलसीदास, सूरदास) - EMI
- आध्यात्मिक एलबम, 'Chants of Moksha' , 'Chants of Surya' एण्ड 'Chants of Shiva – Mile Stone